उच्चैः श्रवसम्=उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा; **अश्वानाम्** घोड़ों में; **विद्धि**=जान; **माम्**=मुझे; **अमृत उद्भवम्**=सागर मन्थन के समय अमृत से उत्पन्न हुआ; **ऐरावतम्**=ऐरावत; **गजेन्द्राणाम्**=हाथियों में; **नराणाम्**=मनुष्यों में; **च**=तथा; **नराधिपम्**=राजा।

अनुवाद

हे अर्जुन! घोड़ों में सागर के अमृत से उत्पन्न उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा और गजराजों में ऐरावत नामक हाथी तथा मनुष्यों में राजा मुझ को ही जान।।२७।।

तात्पर्य

एक समय भक्त सुरों और अभक्त असुरों ने सागर का मन्थन किया। इस मन्थन से अमृत और विष दोनों निकले, जिसमें से विष का पान श्रीशिव जी ने कर लिया था। अमृत से अनेक रत्नों का उद्भव हुआ, जिनमें से एक उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा था। अमृत से ऐरावत नाम के गजराज की भी उत्पत्ति हुई। इन पशुओं की विलक्षण महत्ता है; इसलिए ये दोनों श्रीकृष्ण के रूप हैं।

मनुष्यों में राजा श्रीकृष्ण का रूप है; जैसे श्रीकृष्ण ब्रह्माण्ड-पालन करते हैं, वैसे ही दैवी गुणशील राजा अपने-अपने राज्य का पालन किया करते हैं। भगवान् राम, युधिष्ठिर और परीक्षित महाराज जैसे सभी राजा परम सदाचारी थे और सदा जनता के हित-चिन्तन में तत्पर रहते थे। वैदिक शास्त्रों में राजा को ईश्वर का रूप माना है। दुर्भाग्यवश, धर्मभ्रष्टता के कारण वर्तमान युग में राजतन्त्र बिल्कुल नष्ट हो गया है। परन्तु यह निश्चित है कि पूर्ववर्ती धार्मिक राजाओं के शासन में जनता आज से कहीं अधिक सुखी थी।

आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः।।२८।।

आयुधानाम्=सम्पूर्ण शस्त्रों में; **अहम्**=मैं (हूँ); **वज्रम्**=वज्र; **धेनूनाम्**= गायों में; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **कामधुक्**=सुरभि गाय; **प्रजनः**=सन्तान की उत्पत्ति के लिये; **च**=तथा; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **कन्दर्पः**=कामदेव; **सर्पाणाम्**=सब सर्पों में; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **वासुकिः**=वासुकि।

अनुवाद

शस्त्रों में मैं वज्र हूँ और गायों में कामधेनु हूँ; शास्त्रोक्त रीति से सन्तान की उत्पत्ति का हेतु कामदेव और सर्पों में मुख्य वासुकि भी मैं हूँ।।२८।।

तात्पर्य

वज्र वास्तव में बड़ा ही शक्तिशाली आयुध है। यह श्रीकृष्ण की शक्ति का प्रतीक है। वैकुण्ठ-जगत् में कृष्णलोक की गायों से किसी भी समय यथेष्ट मात्रा में दुग्ध का दोहन किया जा सकता है। अवश्य ही, प्राकृत-जगत् की गायें इस प्रकार की नहीं हैं, पर शास्त्रों से कृष्णलोक में उनका होना निश्चित रूप से सिद्ध होता है।